अपनी बात

निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

नवम्बर 2020

निदेशक
डॉ. रंजना अग्रवाल

सम्पादक
डॉ. बालकराम

सह सम्पादक
डॉ. मनीष मोहन गोरे

सहायक सम्पादक
शुभदा कपिल

प्रोडक्शन
अश्वनी कुमार ब्राह्मी
अरूण उनियाल
मो० शकील अहमद

लेआउट एवं डिजाइन
नीरू विजन
अभिनव राज

बिक्री एवं वितरण
चारू वर्मा
रणबीर सिंह

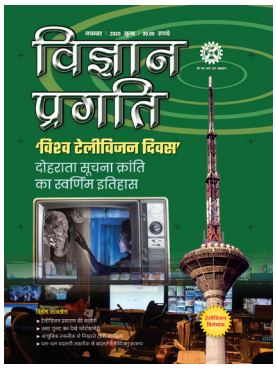

आवरण : **अभिनव राज**

सूचना क्रांति के इस युग में टेलीविजन की भूमिका

www.spotboye.com

सूचना क्रांति के इस युग में टेलीविजन मानवीय जीवन में परिवर्तन लाने में एक महत्वपूर्ण माध्यम साबित हुआ है। आज पूरी दुनिया पर टेलीविजन का जादू छाया हुआ है। यह केवल मनोरंजन का सबसे सस्ता साधन ही नहीं है बल्कि इसने शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, व्यक्तिगत संबंधों, यात्रा आदि के संदर्भ में भी ज्ञान का भंडार खोल दिया है। यह संस्कृतियों व रीति-रिवाजों के आदान-प्रदान के रूप में उभरकर सामने आया है। आज टेलीविजन विभिन्न आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूरे विश्व के ज्ञान में वृद्धि करने में मदद कर रहा है। वर्तमान में यह मीडिया की सबसे प्रमुख ताकत के रूप में उभरा है। इससे विश्व संकीर्ण हुआ है और भूमंडलीकरण का असर दिखने लगा है। परिणामस्वरूप हम सुदूर आयोजित हो रहे कार्यक्रमों का आनंद अब लाइव टीवी के जरिये घर बैठे लेने लगे हैं।

दादा साहेब फाल्के ने 1913 में जब लोगों को सर्वप्रथम कपड़े के पर्दे पर अपनी बनाई हुई प्रथम हिन्दी फिल्म राजा हरीशचंद्र दिखाई थी, उस समय भारत के किसी भी व्यक्ति ने ये नहीं सोचा होगा कि पर्दे पर दिखाई जाने वाली ये फिल्म कभी घर में रखे चौकोर डब्बे में समा जायेगी। यद्यपि उन दिनों फिल्मों में संवाद नहीं हुआ करते थे, इसके बावजूद दादा साहब ने लोगों को वह फिल्म एक अंधेरे कमरे और प्रोजेक्टर पर फिल्म रील की सहायता से दिखाई थी, जिसमें कोई ध्वनि नहीं थी। फिल्मों ने बाद में प्रगति की और वे पहले ध्वनियुक्त स्वरूप में, फिर श्वेत-श्याम से रंगीन स्वरूप में परिवर्तित हो गई। इसी दौरान आविष्कार की जननी आवश्यकता ने विश्व को टेलीविज़न के रूप में एक नया उपहार दिया। यद्यपि भारत में टेलीविज़न बहुत देर से आया, परंतु आज यह हर घर की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। छोटे पर्दे के नाम से जाना जाने वाला टेलीविज़न विश्व पटल पर अपनी एक अमिट जगह बना चुका है।

टेलीविजन की हमारे जीवन में बढ़ती भूमिका और इसके सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा करने के उद्देश्य से 21 नवंबर को विश्व टेलीविजन दिवस के रूप में मनाया जाता है। दरअसल, टेलीविजन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने 17 दिसंबर, 1996 को 21 नवंबर की तिथि को विश्व टेलीविजन दिवस के रूप घोषित किया था। इस दिन को मनाने के पीछे टीवी के जरिए सामाजिक, आर्थिक और आम आदमी के जीवन से जुड़ी कई परेशानियों पर ध्यान केंद्रित करने का तर्क दिया गया है। टेलीविजन एक ऐसा जरिया बन गया, जिसकी सहायता से लाख-दो लाख नहीं, अपितु करोड़ों लोगों को एक साथ संदेश पहुँचाना आसान हो गया। निःसंदेह टेलीविजन के आविष्कार ने सूचना के क्षेत्र में एक क्रांति का आगाज किया है। वर्तमान में हम इसके महत्व को नकार नहीं सकते हैं।

मूल्य
एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : rs@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों ओर मतों के लिये सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।